चार्ल्स ड्रियू
ब्लड बैंक्स के संस्थापक
ऐन

# चार्ल्स ड्रियू

## ब्लड बैंक्स के संस्थापक

# एक लड़के का सपना

जब चार्ल्स ड्रियू चौदह साल का था तो उसकी बहन एलसी बीमार पड़ी. घर में सब लोग बहुत चिंतित थे. उस ज़माने में आज जैसी दवाएं उपलब्ध नहीं थीं. एलसी की तबियत बिगड़ती गई और अंत में उसका देहांत हो गया. उस समय एलसी सिर्फ बारह साल की थी.

उससे चार्ल्स बहुत दुखी हुआ. उसने तभी निर्णय लिया कि वो बड़ा होकर डॉक्टर बनेगा. वो अपनी बहन एलसी जैसे बीमार लोगों की जान बचाना चाहता था.

चार्ल्स जब वो छह महीने का था.

चार्ल्स ड्रियू का जन्म 3 जून, 1904 को वाशिंगटन डी.सी. में हुआ. चार्ल्स के पिता रिचर्ड लोगों के घरों में कालीन फिट करने का काम करते थे. उन्होंने हाई-स्कूल तक पास नहीं किया था पर वो अपने बच्चों को पढ़ाना चाहते थे. वे अपने बच्चों को अनेकों पुस्तकें पढ़ने को देते और उन्हें म्यूज़ियम लेकर जाते थे.

चार्ल्स की माँ नोरा कॉलेज में पढ़ीं थीं और वो एक टीचर थीं. ड्रियू परिवार एक सुखी परिवार था – जिसमें पांच बच्चे थे – चार्ल्स, एलसी, जोसफ, नोरा और ईवा.

चार्ल्स ने अपनी पढ़ाई स्टेवेंस एलीमेंट्री स्कूल से शुरू की. वो स्कूल अश्वेत (काले) बच्चों के लिए था. गोरे बच्चे दूसरे स्कूल में पढ़ने जाते थे. उस समय गोरे और काले लोग न तो एक स्कूल में जा सकते थे और न ही एक साथ काम कर सकते थे. चार्ल्स पढ़ाई में बहुत अच्छा था. उसे फ़ुटबाल और बास्केटबाल खेलना भी बहुत पसंद था.



बारह साल की उम्र में चार्ल्स ने सड़क और चौराहों पर अखबार बेंचना शुरू किया. इसमें वो बहुत सफल हुआ और जल्द ही उसे इस काम के लिए अन्य लड़कों को रखना पड़ा. चार्ल्स एक अच्छा बिज़नसमैन था और उसकी कमाई से परिवार को बहुत मदद मिली.

चौदह साल की उम्र में चार्ल्स अश्वेतों के डन्बर हाई स्कूल में पढ़ने गया. वहां उसने अच्छे अंक प्राप्त किए और खेलों में भी अव्वल रहा. चार्ल्स ने कॉलेज में डॉक्टर बनने का सपना देखा. पर उसके परिवार के पास मेडिकल की पढ़ाई के लिए पैसे नहीं थे. पर क्यूंकि चार्ल्स एक अच्छा खिलाड़ी था इसलिए उसे स्पोर्ट्स कोटे में स्कालरशिप मिलने की सम्भावना थी. स्कालरशिप से उसके लिए आगे पढ़ पाना संभव होता.

चार्ल्स अपने परिवार के बच्चों में सबसे बड़ा था. यह फोटो ईवा के जन्म से पहले ली गई थी.
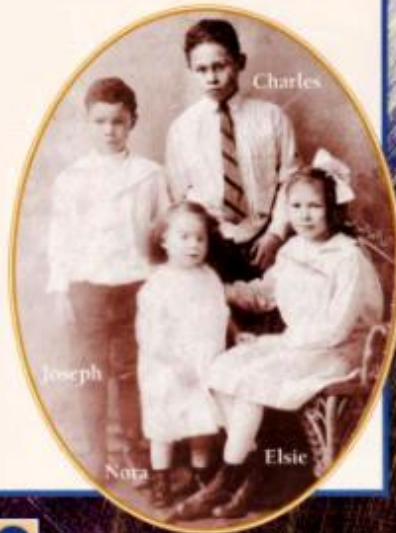
1922 में चार्ल्स को फ़ुटबाल के कोटे में एक स्कालरशिप मिला. वो मेसाचुसेट्स के **एमहर्स्ट कॉलेज** में पढ़ने गया. एमहर्स्ट कॉलेज में कुल 600 छात्र थे पर उनमें से केवल तेरह ही अफ़्रीकी-अमेरिकन (अश्वेत) थे. अब पहली बार चार्ल्स गोरे छात्रों के साथ पढ़ रहा था. अश्वेत होने के कारण कई बार लोग उसके साथ गलत व्यवहार करते थे.

अपने कॉलेज की टीम में चार्ल्स सबसे अच्छा खिलाड़ी था. अक्सर जब एमहर्स्ट कॉलेज दूसरी टीमों के साथ फ़ुटबाल खेलती थी तो भीड़ उसके साथ असभ्य तरीके से पेश आती थी. भीड़ अश्वेत खिलाड़ियों पर चीखती-चिल्लाती थी.

चार्ल्स अपनी फ़ुटबाल टीम की यूनिफार्म में.

एक बार फ़ुटबाल में मैच के बाद टीम ने एक अच्छे होटल में जाकर खाने की सोची. चार्ल्स को होटल में दरवाज़े पर ही रोक दिया गया. उस होटल में अश्वेतों के घुसने पर मनाही थी.

चार्ल्स बहुत होशियार था पर अच्छे छात्रों के एमहर्स्ट कॉलेज क्लब की सदस्यता से उसे वंचित रखा गया. चार्ल्स को कॉलेज के संगीत क्लब में भी दाखिला नहीं मिला. चार्ल्स को इस तरह का बर्ताव बिल्कुल अच्छा नहीं लगता था. पर इस सबके बावजूद वो कड़ी मेहनत से पढ़ता रहा.

अपनी पढ़ाई ख़त्म करने के बाद चार्ल्स ने बाल्टिमोर के **मॉर्गन कॉलेज** में विज्ञान और खेल सिखाने की नौकरी की. उसने अपनी तनख्वाह का एक-एक पैसा बचाया. अंत में मेडिकल स्कूल में दाखिले के लिए वो पैसे बचा पाया. अब शायद वो डॉक्टर बनने के अपने सपने को साकार कर सकता था.

उस ज़माने में गोरे और काले एक नल से पानी नहीं पी सकते थे.

# एक होशियार युवा डॉक्टर

चार्ल्स 1928 में, मॉन्ट्रियल, कनाडा के मिकगिल मेडिकल स्कूल में पढ़ने गया. वहां वो अपने परिवार और अमरीकी मित्रों से बहुत दूर था. उसके पास पैसे भी बहुत कम थे. कई बार मॉन्ट्रियल में वो बहुत अकेलापन महसूस करता था. पर उसने डॉक्टर बनने का पक्का इरादा बनाया था. कठिनाई के दौर में अपने बुलंद इरादे से उसे मदद मिलती थी.

1930 में चार्ल्स ने रोसेनवाल्ड स्कालरशिप जीता. यह स्कालरशिप बहुत होनहार छात्रों को ही मिलता है.

इस स्कालरशिप के बाद चार्ल्स की ज़िन्दगी कुछ आसान हुई. अब वो कभी-कभी बाहर किसी होटल में खा भी सकता था.



चार्ल्स को कनाडा में रहना अच्छा लगा क्योंकि वहां रंग-भेद कम था और वहां अश्वेत और गोरे लोग आपस में मिलते थे. रंग-भेद के मामले में कनाडा, वाशिंगटन डी. सी. से बिल्कुल अलग था. कनाडा में चार्ल्स आसानी से कई दोस्त बना पाया. उसके कुछ दोस्त अश्वेत और कुछ मित्र गोरे थे. चार्ल्स को अपने सभी मित्र पसंद थे.

मिकगिल मेडिकल स्कूल में चार्ल्स की शुमार सबसे अच्छे छात्रों में थी.

चार्ल्स को अपने सभी मित्र पसंद थे, वे भी उसे चाहते थे. चार्ल्स एक गर्मजोश प्रकृति का नेक दिल इंसान था. अब उसकी ज़िन्दगी का अकेलापन काफी कम हुआ था.

कभी-कभी चार्ल्स और उसके दोस्त मोंट्रियल के एक विशेष रेस्टोरेंट में खाने के लिए जाते थे. वहां चार्ल्स अपने लिए एक ख़ास डिश आर्डर करता था – मांस के भुने हुए वो टिक्के उसे बहुत पसंद थे.

1933 में चार्ल्स ने मिकगिल मेडिकल स्कूल से स्नातक की डिग्री प्राप्त की. अपनी कक्षा में वो दूसरे नंबर पर रहा. चार्ल्स को अपनी यह सफलता बहुत अच्छी लगी.

मेडिकल स्कूल समाप्त करने के बाद अगला कदम होता है किसी अस्पताल में अनुभवी डॉक्टरों के नीचे काम करना. दो साल तक चार्ल्स, मोंट्रियल के अस्पतालों में काम करता रहा. अंत में वो एक अच्छा सर्जन बना.

उसके बाद आगे की पढ़ाई के लिए चार्ल्स को अमरीका के एक अस्पताल में जाना पड़ा.



पर गोरे लोगों के अस्पताल यह नहीं चाहते थे कि कोई अश्वेत डॉक्टर उनके गोरे मरीजों का इलाज करे. अंत में वाशिंगटन डी. सी. की होवार्ड यूनिवर्सिटी ने चार्ल्स को स्वीकार किया. वहां चार्ल्स, मेडिकल छात्रों को पढ़ाता था और फ्रीडमैन अस्पताल में जाकर मरीजों के आपरेशन करता था. अब चार्ल्स का परिवार भी पास में था. उसके पिताजी का हाल ही में निधन हुआ था. क्योंकि चार्ल्स अब पास था इसलिए उसकी माँ बहुत खुश थीं.

चार्ल्स (बीच में) होवार्ड यूनिवर्सिटी के मेडिकल छात्रों को पढ़ाता था.

# मरीजों का इलाज

होवार्ड यूनिवर्सिटी और फ्रीडमैन अस्पताल में चार्ल्स ने यह सिद्ध करके दिखाया कि वो एक बहुत होशियार और कुशल डॉक्टर था. वहां के अनुभवी डॉक्टर्स समझ गए कि चार्ल्स बहुत विशेष और होनहार व्यक्ति था.

1938 में चार्ल्स ने रॉकफेलर स्कालरशिप जीता. उन पैसों से वो आगे की पढ़ाई कर सकता था. फिर चार्ल्स को कोलंबिया यूनिवर्सिटी के मेडिकल स्कूल में सर्जरी की एडवांस ट्रेनिंग के लिए दाखिला मिला.

कोलंबिया में जिन डॉक्टर्स के साथ चार्ल्स काम करता था, उनमें से कुछ विश्व-प्रसिद्ध थे. उनमें से एक थे डॉ. जॉन स्कडर. वो रक्त के विशेषज्ञ थे और खून से लोगों की जान बचाने के लिए प्रसिद्ध थे.
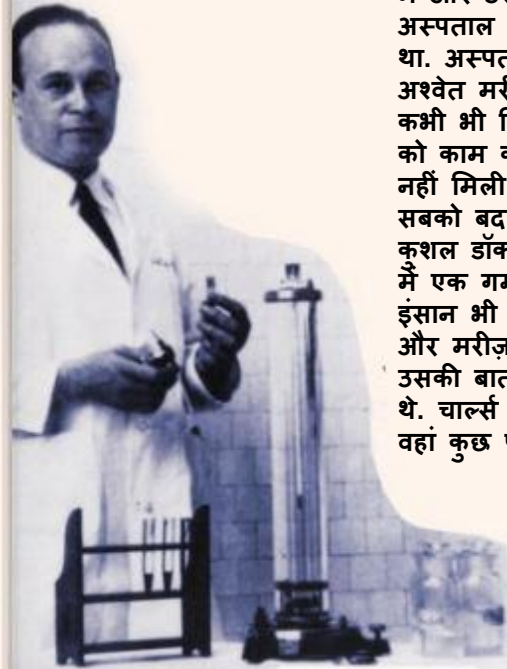


तब तक किसी भी अश्वेत डॉक्टर ने कोलंबिया यूनिवर्सिटी के मेडिकल स्कूल में और उसके प्रेसबायटेरियन अस्पताल में काम नहीं किया था. अस्पताल में बहुत से अश्वेत मरीज़ आते थे पर वहां कभी भी किसी अश्वेत डॉक्टर को काम करने की अनुमति नहीं मिली थी. चार्ल्स ने इस सबको बदला. वो एक बहुत कुशल डॉक्टर था, और साथ में एक गर्मजोश, दोस्ताना इंसान भी था. बाकी डॉक्टर्स और मरीज़ उसे चाहते थे और उसकी बात पर विश्वास करते थे. चार्ल्स की चमड़ी के रंग से वहां कुछ फर्क नहीं पड़ता था.

कोलंबिया यूनिवर्सिटी में चार्ल्स ने रक्त के बारे में बहुत कुछ सीखा.

1939 में चार्ल्स अलाबामा गया. वहां उसने कुछ समय एक ऐसे स्वास्थ्य क्लिनिक में काम किया जहाँ पर गरीब लोगों के पास डॉक्टर की फीस देने तक के लिए पैसे नहीं थे. अलाबामा जाते समय वो एटलांटा में अपने दोस्तों से मिलने गया. वहां चार्ल्स की मुलाक़ात एक टीचर – लेनोर रबबिंस से हुई. 23 सितम्बर 1939 को चार्ल्स और लेनोर की शादी हुई. बाद के सालों में उनके चार बच्चे हुए – रौबर्टा (बेब), चरलेने, रिहा और चार्ल्स जूनियर.

जून 1940 में चार्ल्स को कोलंबिया यूनिवर्सिटी ने डॉक्टर ऑफ़ मेडिकल साइंस की डिग्री प्रदान की. इस डिग्री को पाने वाला वो पहला अफ़्रीकी-अमरीकन था.

कोलंबिया में चार्ल्स ने इस बात का अध्ययन किया कि खून से किस प्रकार लोगों की जिंदगी बचाई जा सकती थी. जब लोग किसी बीमारी या दुर्घटना में खून खोते हैं, तो उनके शरीर में बाहर से खून डाला जा सकता है. इसको **ब्लड-ट्रांसफ्यूज़न** कहते हैं.

ड्रियू परिवार घर पर : बाएं से रिहा, चार्ल्स, चरलेने, बेब, लेनोर और शिशु चार्ल्स जूनियर.

चार्ल्स ने खून को सुरक्षित तरह से संग्रह (स्टोर) करने के तरीके भी विकसित किए. यह महत्वपूर्ण है ज़रुरत के समय मरीज़ को खून उपलब्ध होना अनिवार्य है. खून का जहाँ संग्रह करा जाता है उस जगह को **ब्लड-बैंक** कहते हैं. चार्ल्स ने यह खोजा कि अगर खून में **प्लाज्मा** और **रेड ब्लड सेल्स** दोनों को, अलग-अलग किया जाए तो फिर खून को लम्बी अवधि तक सुरक्षित रखा सकता था. प्लाज्मा, खून का तरल भाग होता है. चार्ल्स ने शोध करके पता किया कि प्लाज्मा, ट्रांसफ्यूज़न के लिए बेहतर था.

खून से लोगों की कैसे जान बचाई जा सकती थी? इस बारे में चार्ल्स किसी भी अन्य डॉक्टर से ज्यादा जानता था.

# रक्त से लोगों की ज़िन्दगी बचाना

1939 में जब दूसरा महायुद्ध शुरू हुआ तब चार्ल्स को यूरोप में एक महत्वपूर्ण नौकरी का ऑफर मिला. यूरोप में बहुत से लोग युद्ध में ज़ख्मी हुए थे या मारे गए थे. इंग्लैंड पर लगातार बम्ब गिर रहे थे. हजारों लोगों को जिंदा बचाने के लिए वहां ब्लड-ट्रांसफ्यूज़न की सख्त ज़रुरत थी. इंग्लैंड के पास खून का इतना भंडार नहीं था, इसलिए उसने अमेरिका से खून की मदद मांगी. चार्ल्स को 'ब्लड टू ब्रिटेन' कार्यक्रम का प्रमुख बनाया गया.



चार्ल्स ने एक तेज़ और सुरक्षित प्रणाली विकसित की जिसके द्वारा ब्रिटेन के लोगों को जल्दी खून पहुँचाया जा सके. उसने ऐसे कई केंद्र स्थापित किये जहाँ अमेरिकी लोग अपना खून दान कर सकते थे. जब अमेरिकी लोगों को यह पता चला कि उनके खून की ब्रिटेन को इतनी सख्त ज़रुरत है तो फिर लोग रक्त-दान के लिए लाइन लगाकर खड़े हो गए.

चार्ल्स (बाएं) ने पहला मोबाइल ब्लड-बैंक शुरू किया. उसके लिए उसने एक एम्बुलेंस का इस्तेमाल किया.

मरीज़ की ज़रुरत के समय तक रक्त को संग्रह करके रखा जाता है.

चार्ल्स ने ऐसे केंद्र स्थापित किये जहाँ खून को स्टोर किया जा सकता था. उसे ब्लड-बैंक्स का गहरा ज्ञान था.

उसने रक्त के पहली बार परीक्षण और दूसरी बार परीक्षण की प्रणाली स्थापित की. यह बहुत ज़रूरी था कि रक्त, पूरी तरह से कीटाणु मुक्त हो. अगर रक्त में कुछ रोगाणु होते तो ट्रांसफ्यूज़न वाले मरीज़ की मृत्यु हो सकती थी.

चार्ल्स ने बहुत तेज़ी से ब्रिटेन को खून भेजने का प्रबंध किया. उससे हजारों ब्रिटिश नागरिकों की जान बची. चार्ल्स की क्रांतिकारी प्रणाली के बाद अब जहाँ कहीं भी मरीजों को रक्त की ज़रुरत पड़ती उन्हें वहां रक्त पहुँचाया जा सकता था.



उसके बाद युद्ध या किसी प्राकृतिक आपदा के दौरान डॉ. चार्ल्स ड्रियू की योजना अपनाई जाने लगी. चार्ल्स ने रक्त को सुरक्षित रूप से इकट्ठा करने, संग्रह और लोगों तक तुरंत पहुँचाने की प्रणाली विकसित की थी.

अमरीकी गोरे और अश्वेत नागरिकों ने ब्रिटेन के लिए रक्त दान दिया था. आज हम जानते हैं कि सब लोगों का रक्त एक-समान होता है. पर उस समय कुछ लोगों का मानना था कि अश्वेत लोगों के रक्त को अलग रखना चाहिए. उन्हें लगता था कि गोरे लोगों को अश्वेत लोगों का खून नहीं चढ़ाना चाहिए. यह मान्यता बिल्कुल गलत थी और चार्ल्स को इन बातों से बहुत दुःख होता था.
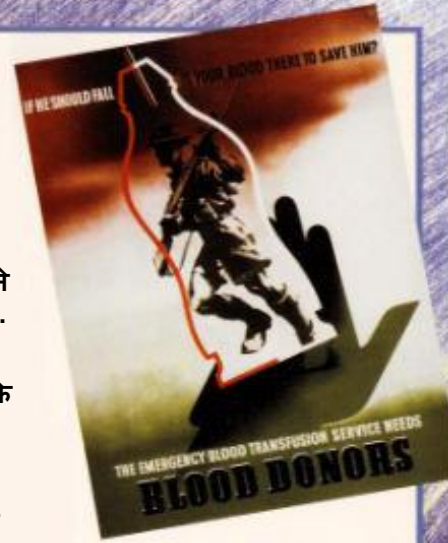
ब्रिटेन ने लोगों को रक्त दान करने के लिए पोस्टर बनाए.

# टीचर और लीडर

उसके बाद चार्ल्स ने अमरीका में हर जगह रक्त केंद्र स्थापित किये. चार्ल्स ने अमेरिकन रेड क्रॉस के साथ काम किया, और सेना के जवानों के लिए आम लोगों का रक्त इकट्ठा किया. रेड क्रॉस ने भी अश्वेत लोगों का रक्त लेने से इनकार किया. इससे चार्ल्स को बहुत गुस्सा आया.

उसके बाद चार्ल्स होवार्ड यूनिवर्सिटी और फ्रीडमेन्स अस्पताल वापिस चला गया. वहां उसने अनेकों अश्वेत डॉक्टर्स को ट्रेन किया.

वो चाहता था कि काले डॉक्टर्स के साथ भी गोरे डॉक्टर्स जैसा ही अच्छा व्यवहार हो. वो चाहता था कि अश्वेत डॉक्टर्स अपने कार्य में सबसे कुशल हों. चार्ल्स के अनुसार वो उसके जीवन का सबसे महत्वपूर्ण काम था.



तब तक चार्ल्स प्रसिद्धि के शिखर पर पहुँच चुका था. वो किसी निजी कम्पनी के लिए काम करके बहुत धन कम सकता था. पर उसे पैसों से ज्यादा लोगों से प्रेम था. उसके बाद फ्रीडमेन्स अस्पताल ने चार्ल्स को अस्पताल का प्रमुख डॉक्टर नियुक्त किया.

चार्ल्स और उसके ब्लड-बैंक के कार्यकर्ता.

अक्सर चार्ल्स दिन में सोलह घंटे काम करता था. वो सिगरेट और शराब बिल्कुल नहीं छूता था. वो कभी अपशब्द भी उपयोग नहीं करता था. वो अपने छात्रों के लिए एक आदर्श टीचर था. अच्छे डॉक्टर बनने के लिए वो उन्हें दया और प्रेम की सीख देता था.

चार्ल्स, अश्वेत डॉक्टर्स की ज़िन्दगी की कठिनाइयों से अवगत था. उस समय बहुत से अस्पताल, अश्वेत डॉक्टर्स को मरीज़ नहीं देखने देते थे. चार्ल्स ने अश्वेत डॉक्टर्स से अपना संघर्ष ज़ारी रखने को कहा, बिल्कुल उसी की तरह जैसे उसने अपनी ज़िन्दगी में संघर्ष किया था.

चार्ल्स के लिए युवा अश्वेत डॉक्टर्स की ट्रेनिंग एक बेहद महत्वपूर्ण काम था.



1944 में चार्ल्स को नेशनल एसोसिएशन फॉर द एडवांसमेंट ऑफ़ कलर्ड पीपल (NAACP) की ओर से स्पिनगर्न मैडल प्राप्त हुआ. यह महत्वपूर्ण पुरुस्कार हर वर्ष किसी नामी और प्रसिद्ध अश्वेत व्यक्ति को दिया जाता था.

चार्ल्स के लिए अब इससे भी बड़ा क्षण आने वाला था. वो युवा अश्वेत डॉक्टर्स को सर्जरी की ट्रेनिंग देता था. अब उन डॉक्टर्स की परीक्षा का समय था. अब उनकी प्रतिस्पर्धा सीधे गोरे डॉक्टर्स के साथ थी. चार्ल्स चाहता था कि उसके सभी छात्र अच्छा करें.

जब नतीज़े निकले तब चार्ल्स बहुत खुश हुआ. उसका एक छात्र सर्वप्रथम आया. एक अन्य छात्र दूसरे स्थान पर आया. चार्ल्स ख़ुशी से कूदने लगा.

चार्ल्स ने अपनी मृत्यु से दो दिन पहले ही एक भाषण दिया.

1941 और 1950 के बीच अमरीका में आधे से ज्यादा अश्वेत सर्जनों की ट्रेनिंग अकेले सिर्फ डॉ. चार्ल्स ड्रियू ने की. अब उसकी ज़िन्दगी का सबसे बड़ा सपना साकार हुआ था. जिन अश्वेत डॉक्टर्स को उसने पढ़ाया था वे अब अपने शिखर पर थे. उन्होंने यह सिद्ध करके दिखाया था कि वे हर मायने में गोरे डॉक्टर्स जितने ही अच्छे थे.

1950 में चार्ल्स एक बार फिर से अलाबामा के मुफ्त क्लिनिक में गरीब लोगों को अपनी सेवाएं देने के लिए गया. यह काम भी उसके लिए बेहद महत्वपूर्ण था. पर अलाबामा जाते समय एक कार दुर्घटना में चार्ल्स की मृत्यु हो गई. उस समय वो सिर्फ 45 वर्ष का था.



दुनिया के कोने-कोने से लोगों ने चार्ल्स के काम की प्रशंसा की. उसने मरीजों तक रक्त जल्दी से पहुँचाने की एक सफल व्यवस्था निर्माण की थी. डॉक्टर्स को रक्त के बारे में जो कुछ पता था उसमें चार्ल्स ने बहुत कुछ जोड़ा था. साथ में उसने सैकड़ों युवा अश्वेत डॉक्टर्स को प्रशिक्षित भी किया.

चार्ल्स के सम्मान में एक डाक-टिकट ज़ारी किया गया.

चार्ल्स ने किसी भी मुश्किल को अपने सपनों के साकार होने में आड़े आने नहीं दिया. उसने एक महान और कुशल डॉक्टर बनने के लिए बहुत संघर्ष किया. फिर उसने अपने क़दमों पर चलने के लिए अन्य अश्वेत डॉक्टर्स के लिए भी रास्ता प्रशस्त किया.

बाद में अमरीका में कई स्कूलों ने अपना नाम डॉ. चार्ल्स ड्रियू के सम्मान में रखा. 1981 में चार्ल्स के जन्मदिन पर उसके सम्मान में एक डाक-टिकट ज़ारी किया गया. लोस अन्जेल्स में, उसके नाम से एक मेडिकल कॉलेज खोला गया. अपनी छोटी सी ज़िन्दगी में डॉ. चार्ल्स ड्रियू ने इस दुनिया को एक बेहतर जगह बनाने का भरसक प्रयास किया.

Dr. Charles Richard Drew, M.D., C.M., Med. D.Sc.

OUTSTANDING DOCTOR~FAMOUS ATHLETE

Along with Paul Robeson, Ned Gourdin, Ralph Metcalfe, Jesse Owens, Charlie Drew was a great college athlete~ four letter man and track captain at both Amherst and McGill. Despite his achievements in medicine, he recalls his post as coach at Morgan College as "The best job I ever did!"

Alston

**"अगर तुम पक्का इरादा बना लो, तो फिर तुम कुछ भी कर सकते हो," चार्ल्स ड्रियू ने कहा.**

# समय-रेखा

| | |
|---|---|
| 1904 | 3 जून को वाशिंगटन डी. सी. में जन्म |
| 1926 | एमहर्स्ट कॉलेज से स्नातक की डिग्री<br>मॉर्गन कॉलेज में कोच |
| 1933 | मिकगिल यूनिवर्सिटी के मेडिकल कॉलेज से स्नातक की डिग्री |
| 1935 | होवार्ड यूनिवर्सिटी और फ्रीडमेन्स कॉलेज में टीचर |
| 1938 | रॉकफेलर स्कालरशिप जीतने के बाद कोलंबिया यूनिवर्सिटी में प्रवेश |
| 1939 | लेनोर रबिंस से विवाह |
| 1940 | कोलंबिया यूनिवर्सिटी से मास्टर्स |
| 1941 | *ब्लड फॉर ब्रिटेन* प्रोग्राम के प्रमुख |
| 1944 | स्पिनगर्न मैडल जीता |
| 1950 | कार दुर्घटना में देहांत |